ग्रनकीयातमंग·

नं· १०२०

नं० ५५११ – घ
जानकी प्रात मंगलम्
पत्राणि ३ (त्रीणि)
(संपूर्णम्)

ॐ श्रीरामाय नमः॥ ॐ प्रात समै रघुवीर जगावै
कौसल्या महतारी॥ उठो लाल जी भोर भयो
है सुरनर मुनि हितकारी॥ प्रात समै रघुवी०॥
सुनत प्रिया वचन उठे रघुनंदन॥ नैनन पल
क उघारी॥ चितवत श्रमै कीयो चवरावर॥ म
दित भई नरनारी॥ प्रात समै रघुवीर०॥ १॥

सं. २०२० क
जानकीप्रीतमंगल
३ प॰

प्रा
८९

ब्रह्मादिकं इंद्रादिकादेवता। नारदमुनि
रिषिवारो। बातीवेदविमलजसगावै॥
खेचरकुलजसविस्तारो॥ आतमसैमेरखुवी: १
भयशत्रुगणचवरडरावै॥ जनकसु:
नालियेजानो॥ मैबापानलेयकलख
मत॥ भरकंचनकेथालो॥ प्रानसमैमरखु

तोद॰ ॥४॥ कलिग्रसनानन्दानवङ्केतो ॥ यो
गाजुकं घनवारी ॥ माधवदासकह्लालग
वरतो ॥ ननमनयनवालिहारी ॥ प्रानस्मै
रघुवीर ॥ ५ ॥ इति राममंगलं संपूर्णं ॥
ॐ श्रीरामाय नमः ॥ ॐ ध्यानस्मै उठि जनक
नंदनी त्रिभुवननाथजगावै ॥ उठो ना॰

प्रा॰
८७

यमसमनाथप्राणप्रयाणभूपतिभवनम॰
लावै॥ प्रानसमैउटिजनकनेंदितिविष
वननाथजगावै॥ ७ ॥ हस्तकमलकराव
रणपलोटै॥ लैलै धूगानलगावै॥ पट
परसतगौतमकीनारी॥ त्रवहिपवन
परपावै॥ प्रानसमैउटिजनकनेंदलो॰

त्रिभुवननाथजगावै ॥ ४ ॥ ऊवजीमालणा·
लीमोतीयनकी ॥ कोंघ्रगुंथीमहराजावै ॥
गोचवबाविमलखवदनपर ॥ पाणकोपै
चवनावै ॥ प्रातसमैउठिजनकतंदनीत्रि
भुवननाथजगावै ॥ ५ ॥ कनककलश·
ज्यारीदोविप्राणौ ॥ दोनतदानकरावै ॥ क

या कमलनयनमुखेनिरखेरामको॥ अ्राबेट
८८ उरनसमावै॥ प्रानसमैउंटजनकवेदनो
त्रिभुवननाथजगावै॥ ४॥ कोटिब्रमनान
दानवकूकीनो॥ केसरतिलकचढावै॥ का
नेरामकदालगिवरनो॥ चरनकमल
चितलावै॥ प्रानसमैउंटजनकवेदनोत्रि
भुवननाथजगावै इतिश्रीजानकीप्रालमंगलसंपू